डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

साहित्य अकादेमी द्वारा मंगलेश डबराल की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा आयोजित

सभी ने उन्हें एक वैश्विक भारतीय कवि, सजग संपादक और संवेदनशील व्यक्तित्व के रूप में किया याद

नई दिल्ली। 16 दिसंबर 2020; साहित्य अकादेमी द्वारा आज प्रख्यात कवि एवं साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त मंगलेश डबराल जी की स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। आभासी मंच पर आयोजित इस श्रद्धांजलि सभा के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव एवं अन्य अधिकारियों ने मंगलेश जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि व्यक्त की। सचिव के. श्रीनिवासराव ने श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए कहा कि मंगलेश डबराल की अपनी एक स्पष्ट आवाज और विनम्र काव्यभाषा थी, जिसकी वजह से उनकी वैश्विक स्तर पर पहचान थी। उन्होंने अपनी रचनाओं में जनपक्षधरता को प्राथमिकता दी।

प्रख्यात लेखिका चित्रा मुद्गल ने कहा कि वे केवल हिंदी के नहीं बल्कि भारतीय भाषाओं के कवि थे और उन्होंने एक नई पीढ़ी को प्रेरणा देते हुए तैयार किया। उनकी कविताओं में पहाड़ का ही दर्द नहीं बल्कि वहाँ के पत्थर का दर्द व्यक्त हुआ था। उनकी कविता भाषा अतुलनीय थी और उनकी असहमति में एक ताकत थी। आनंद स्वरूप वर्मा ने कहा कि डबराल जी ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य के साथ–साथ विदेशी साहित्य के साथ भी संपर्क का एक बड़ा सेतु तैयार किया। प्रख्यात नाटकार एवं लेखक असगत वजाहत ने युवा अवस्था में उनके साथ बिताए गए समय को याद करते हुए कहा कि वे अपनी जवानी के दिनों में भी अपने आस–पास के लोगों की चिंता उसी तरह करते थे जैसे कोई बुजुर्ग आस–पास के लोगों का ध्यान रखता है इसलिए कई बार हम उन्हें जवान बूढ़ा कहकर बुलाते थे। वे इंसानियत पर अटूट विश्वास करने वाले कवि थे। प्रख्यात अनुवादक प्रभाती नौटियाल ने मंगलेश जी को याद करते हुए कहा कि मैं उनकी किशोर अवस्था से उनके साथ रहा और उन्होंने कविता में जो भी कुछ व्यक्त किया है वह इतना अलौकिक और असाधारण था कि उसका आकलन करने के लिए अभी हमें बहुत समय लगेगा। उन्होंने उनके विदेशी साहित्य में गहरी रुचि होने की भी चर्चा की।

प्रख्यात कवि अरुण कमल जी ने कहा कि वे ऐसे कवि थे जिन्होंने पहाड़ का ही नहीं बल्कि जो भी कहीं हाशिए पर था उसे अपनी कविता में लाकर गरिमा प्रदान की। सुंदर चंद ठाकुर ने कहा कि उनके जीवन के हर हिस्से से कविता फूटती थी। वे केवल राजनीतिक रूप से सजग ही नहीं बल्कि प्रेम को बहुत सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत करने वाले कवि भी थे। प्रियदर्शन ने कहा कि उनमें साधारण की असाधारणता थी। वे कविता से ही अत्याचारियों को हराने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। उनकी कविता में सबसे बड़ा वैश्विक तत्व उसमें मानवीय ऊष्मा को होना था। प्रख्यात मराठी कवि चंद्रकांत पाटिल ने कहा कि वे मराठी साहित्य के बारे में बहुत सजग थे और हमेशा उसमें रुचि लेते थे। उन्होंने भोपाल में उनके साथ बिताए समय को याद करते हुए कहा कि उनकी रचनात्मक ऊर्जा हम सब के लिए प्रेरणादायक होती थी। प्रख्यात मलयाळम कवि के. सच्चिदानंदन ने उन्हें सामाजिक रूप से जागरूक कवियों की परंपरा का अंतिम प्रतिनिधि मानते हुए कहा कि वे साधारण होते हुए भी अपने आप में असाधारण थे। उन्होंने अपनी कविता, अपना मान हमेशा कायम रखा। वे सच्चे मायनों में हिंदी कवि नहीं बल्कि भारतीय कवि थे। पंजाबी की प्रख्यात लेखिका वनीता ने उनको याद करते हुए पंजाबी में अनूदित मंगलेश जी की एक कविता जो शहर में रहने को लेकर थी, का पाठ किया। फिल्मकार प्रवीण अरोड़ा ने उन्हें युवा पीढ़ी के लिए सच्चे मार्गदर्शक के रूप में याद करते हुए कहा कि वे युवाओं को हमेशा श्रेष्ठ और नई दृष्टि से काम करने की प्रेरणा देते थे। प्रख्यात कवि मदन कश्यप ने कहा कि मंगलेश जी ने पहाड़ को केवल ऊपर से ही नहीं देखा बल्कि उसमें समाई गतिशीलता और करुणा को भी देखा। समय की क्रूरता को उन्होंने बेहद करुणा के साथ वैश्विक बनाया। उन्होंने संपादन में उनकी कठोरत सजगता को भी याद किया। प्रख्यात पत्रकार रवींद्र त्रिपाठी ने कहा कि मंगलेश जी संगीत को जिस तरह से कविता में लाए वैसा शायद ही कोई कर पाया। उनकी कविता में क्राफ्ट का गहरा अनुशासन था। उन्होंने वर्तमान कविता को वैश्विकता से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। प्रसिद्ध कवि लीलाधर मंडलोई ने उन्हें ऐसे कवि के रूप में याद किया जिसके अंदर एक संवेदनशील मनुष्य था, जो लगातार

संवाद के लिए आतुर रहता था। उन्होंने साहित्यिक पत्रकारिता को भी बेहद ऊँचाई प्रदान की। उनके कवि रूप के अलावा भी कई रूप थे जिन्हें पहचानने की जरूरत है। कवि लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने आकाशवाणी के कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी को याद करते हुए कहा कि उनका जाना कविता में जनपक्षधरता के एक मजबूत स्वर का जाना है। कवि बुद्धिनाथ मिश्र ने कहा कि उन्होंने हिंदी कविता को लयात्मकता प्रदान की। मंजुला राणा ने उनको याद करते हुए कहा कि उनके जाने से पहाड़ का एक संस्कृतिकर्मी और कर्मयोद्धा हमारे बीच से चला गया है। उनके डिक्शन में हाशिए के लोगो को जगह मिली हुई थी। हमने भारतीय साहित्य के एक दृष्टा को खो दिया है। मराठी के युवा साहित्यकार बलवंत जेऊरकर ने कहा कि मंगलेश जी जितने हिंदी के कवि थे उतने ही मराठी के भी। उन्होंने उनके संग्रह 'हम जो देखते हैं' के मराठी अनुवाद के समय को साझा करते हुए कहा कि उन्होंने हमेशा सहयोग दिया और उनके जाने से मराठी की युवा पीढ़ी काफी दुखी है। मंगलेश जी के परिवार से श्रद्धांजलि सभा में शामिल हुई उनकी बेटी अल्मा और प्रमोद कौंसवाल ने साहित्य अकादेमी और श्रद्धांजलि सभा में शामिल सभी के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि सभी के सहयोग से मंगलेश जी के अधूरे रहे कार्य को पूरा करने का प्रयास किया जाएगा। अंत में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि उन्होंने पहाड़ के लालित्य को नहीं बल्कि वहाँ की बदहाली को गहरे तक महसूस किया और इसको अपनी आवाज दी। उन्होंने मंगलेश जी द्वारा साहित्यिक पत्रकारिता को श्रेष्ठतम रूप में प्रस्तुत करने के लिए भी उनको याद किया। सभा का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

के. श्रीनिवासराव